SAHIL BHOGAL

AVNEET

Model: Web-Milan-Phal

Order No: 121082801

कुँडली मिलान का महत्व

वैवाहिक जीवन में अनुकूलता हेतु जन्मकुण्डली मिलान किया जाता है।

इसमें सर्वप्रथम अष्टकूट मिलान किया जाता है। जातक की राशि व नक्षत्र के अनुसार उसका वर्ण, वश्य, तारा, योनि, राशेश, गण, भकूट एवं नाडी का ज्ञान करके वर-वधू के जीवन की अनुकूलता अथवा प्रतिकूलता का निर्णय किया जाता है। वर्ण विचार से कर्म, वश्य विचार से स्वभाव, तारा विचार से भाग्य, योनि विचार व ग्रह मैत्री विचार से पारस्परिक संबध, गण से सामाजिकता, भकूट से जीवन में तालमेल एवं नाड़ी विचार से स्वास्थ्य व सतांन संबधी फल का विचार किया जाता है। इन सभी गुणों को क्रमशः 1 से 8 तक अंक दिये जाते है। इस प्रकार अष्टकूट विचार में कुल 36 गुणों का विचार किया जाता है। जिसमें कम से कम 18 गुणों का होना आवश्यक है। इससे कम गुण वाले विवाह ज्योतिषीय विधान के अनुसार अव्यवहारिक रहते हैं।

अष्टकूट मिलान के साथ मांगलिक दोष का विचार भी अति महत्वपूर्ण माना जाता है। यदि मंगल लग्न कुंडली में 1,4,7,8 एवं 12 वें भाव में स्थित हो तो मंगली दोष होता है। मंगली दोष निवारण के लिए आवश्यक है कि वर-वधू दोनों मंगली न हों या दोनों मंगली हों। शास्त्रों में इनके अलावा भी दोष निवारण के सूत्र दिए गए हैं। इस दोष के निवारण से किसी प्रकार के अमंगल की संभावनाएं कम हो जाती है और वैवाहिक जीवन सुख व शांतिपूर्ण गुजरता है।

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
28/10/1995	जन्म तिथि	11/11/1998
शनिवार	दिन	बुधवार
घंटे 20:55:00	जन्म समय	11:10:00 घंटे
घटी 36:02:13	जन्म समय(घटी)	11:13:26 घटी
India	देश	India
Delhi	स्थान	Gzb
28:40:53 उत्तर	अक्षांश	28:40:08 उत्तर
77:13:22 पूर्व	रेखांश	77:27:13 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:21:07	स्थानिक संस्कार	-00:20:11 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:30:06	सूर्योदय	06:39:41
17:39:36	सूर्यास्त	17:28:36
23:48:02	चित्रपक्षीय अयनांश	23:50:17

मिथुन	लग्न	धनु
बुध	लग्न लग्नाधिपति	गुरु
धनु	राशि	कर्क
गुरु	राशि-स्वामी	चन्द्र
मूल	नक्षत्र	आश्लेषा
केतु	नक्षत्र स्वामी	बुध
4	चरण	4
सुकर्मा	योग	ब्रह्म
कौलव	करण	कौलव
भी-भीमा	जन्म नामाक्षर	डो-डौली
वृश्चिक	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	वृश्चिक
क्षत्रिय	वर्ण	विप्र
मानव	वश्य	जलचर
श्वान	योनि	मार्जार
राक्षस	गण	राक्षस
आद्य	नाड़ी	अन्त्य
मूषक	वर्ग	श्वान

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
केतु 1वर्ष 1मा 24दि		05:00:01	मिथु	लग्न	धनु	24:22:32	बुध 3वर्ष 5मा 2दि	
चन्द्र		10:55:59	तुला	सूर्य	तुला	24:46:58	शुक्र	
22/12/2022		11:08:34	धनु	चंद्र	कर्क	27:18:51	15/04/2009	
21/12/2032		11:47:15	वृश्चि	मंगल	सिंह	26:54:30	15/04/2029	
चन्द्र	22/10/2023	25:26:37	कन्या	बुध	वृश्चि	17:34:25	शुक्र	14/08/2012
मंगल	22/05/2024	21:32:54	वृश्चि	गुरु व	कुंभ	24:19:56	सूर्य	14/08/2013
राहु	21/11/2025	28:59:53	तुला	शुक्र	तुला	27:49:22	चन्द्र	15/04/2015
गुरु	23/03/2027	24:41:57	कुंभ व	शनि व	मेष	04:53:34	मंगल	14/06/2016
शनि	22/10/2028	02:40:59	तुला व	राहु	सिंह	03:58:25	राहु	15/06/2019
बुध	23/03/2030	02:40:59	मेष व	केतु	कुंभ	03:58:25	गुरु	13/02/2022
केतु	22/10/2030	02:55:59	मक	हर्ष	मक	15:12:14	शनि	15/04/2025
शुक्र	22/06/2032	29:07:38	धनु	नेप	मक	05:48:27	बुध	13/02/2028
सूर्य	21/12/2032	05:41:54	वृश्चि	प्लूटो	वृश्चि	13:20:34	केतु	15/04/2029

23:48:02 चित्रपक्षीय अयनांश 23:50:17

लग्न-चलित

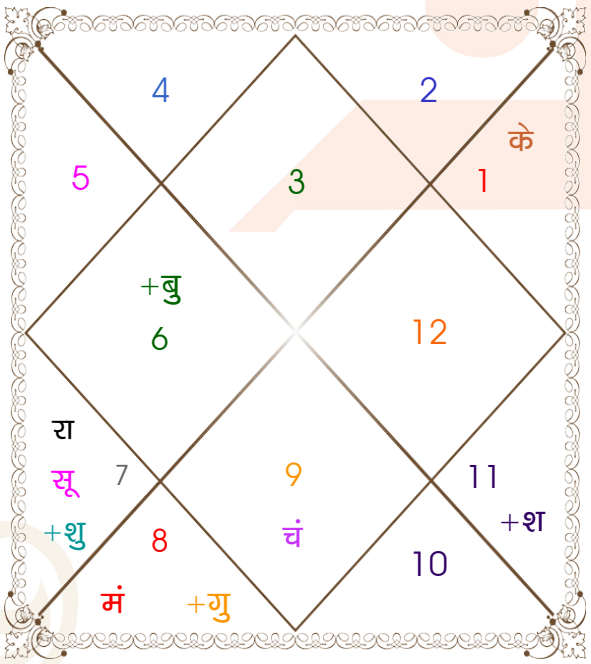

लग्न-चलित

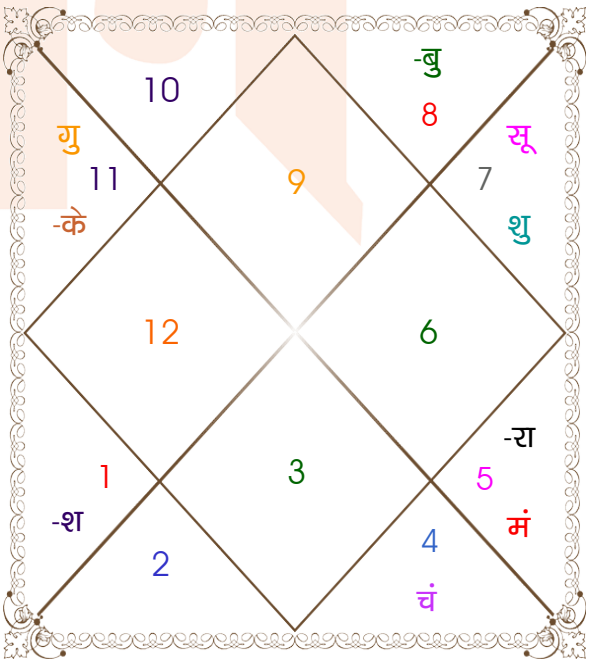

चन्द्र कुंडली

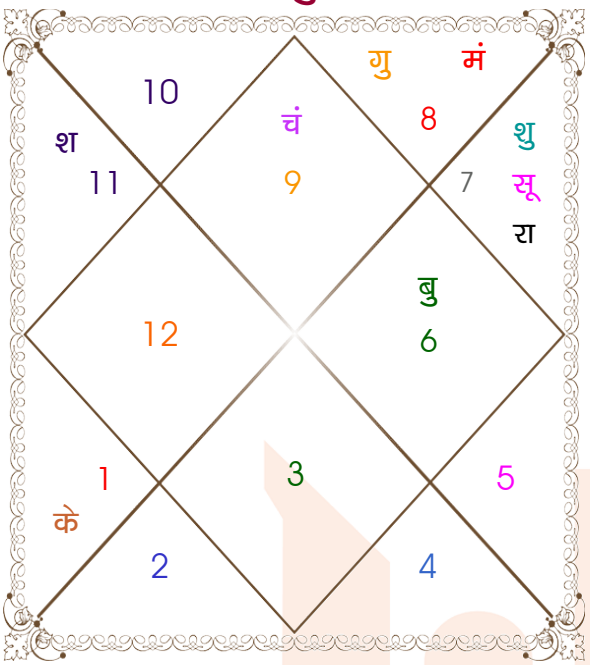

चन्द्र कुंडली

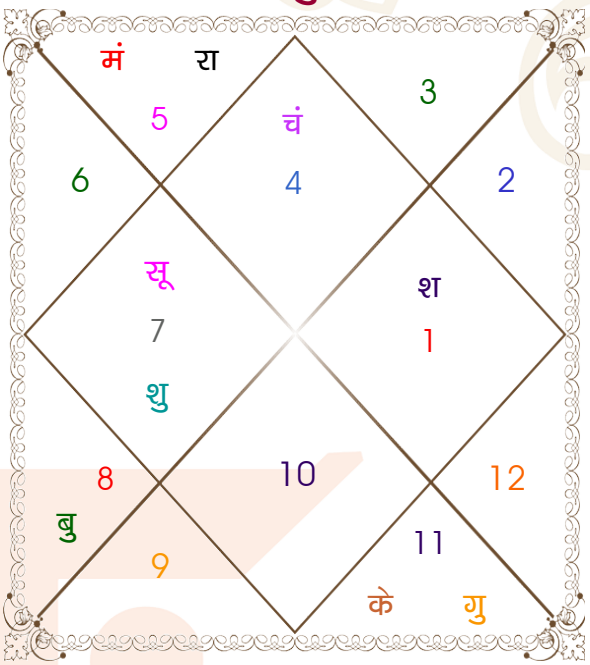

नवमांश कुंडली

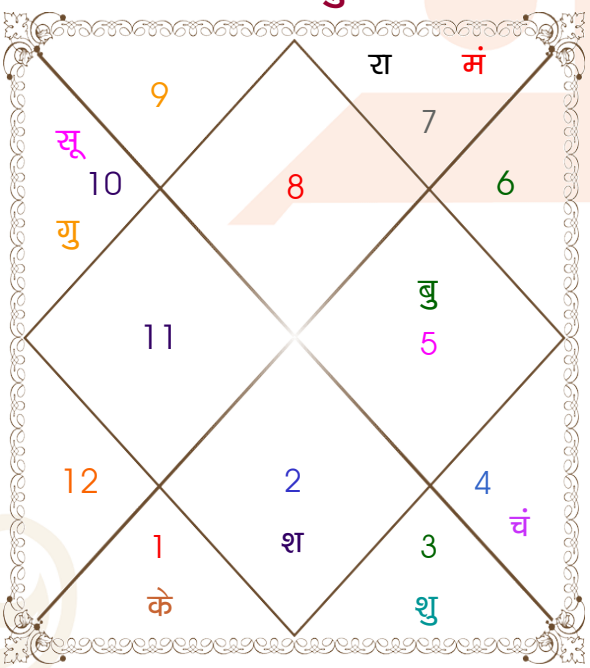

नवमांश कुंडली

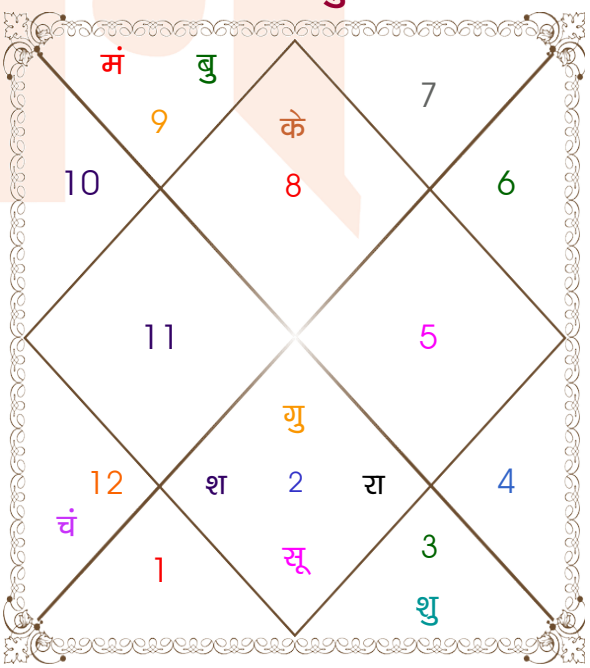

कृष्णमूर्ति पद्धति

भोग्य दशा काल : केतु 1 वर्ष 1 मास 4 दिन

के.पी. अयनांश : 23:41:41

फॉरच्युना : सिंह 05:18:57

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		तुला	11:02:19	शुक्र	राहु	शनि	बुध
चंद्र		धनु	11:14:55	गुरु	केतु	शनि	गुरु
मंगल		वृश्चि	11:53:36	मंगल	शनि	चंद्र	शुक्र
बुध		कन्या	25:32:58	बुध	मंगल	राहु	शुक्र
गुरु		वृश्चि	21:39:15	मंगल	बुध	सूर्य	मंगल
शुक्र		तुला	29:06:13	शुक्र	गुरु	सूर्य	शनि
शनि	व	कुंभ	24:48:18	शनि	गुरु	बुध	चंद्र
राहु	व	तुला	02:47:19	शुक्र	मंगल	शुक्र	शुक्र
केतु	व	मेष	02:47:19	मंगल	केतु	शुक्र	बुध
हर्ष		मक	03:02:19	शनि	सूर्य	शनि	शनि
नेप		धनु	29:13:59	गुरु	सूर्य	राहु	राहु
प्लूटो		वृश्चि	05:48:14	मंगल	शनि	बुध	केतु

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	मिथु	05:06:21	बुध	मंगल	सूर्य	राहु
2	मिथु	27:55:15	बुध	गुरु	शुक्र	गुरु
3	कर्क	21:51:37	चंद्र	बुध	सूर्य	गुरु
4	सिंह	19:59:48	सूर्य	शुक्र	राहु	मंगल
5	कन्या	23:55:19	बुध	मंगल	मंगल	शुक्र
6	वृश्चि	00:50:30	मंगल	गुरु	मंगल	शनि
7	धनु	05:06:21	गुरु	केतु	मंगल	शनि
8	धनु	27:55:15	गुरु	सूर्य	चंद्र	शनि
9	मक	21:51:37	शनि	चंद्र	शुक्र	गुरु
10	कुंभ	19:59:48	शनि	राहु	मंगल	चंद्र
11	मीन	23:55:19	गुरु	बुध	मंगल	शुक्र
12	वृष	00:50:30	शुक्र	सूर्य	राहु	सूर्य

भाव कुंडली

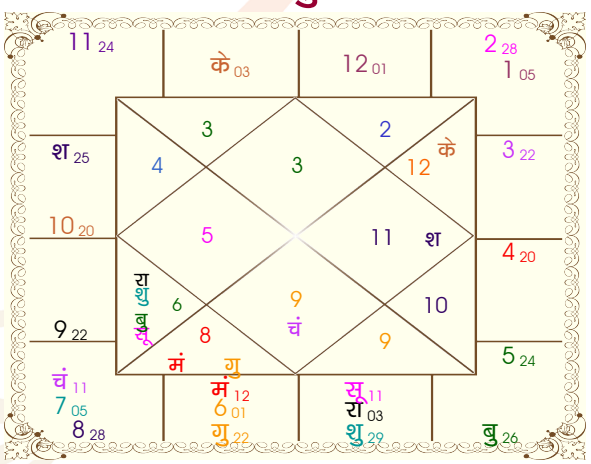

भोग्य दशा काल : बुध 3 वर्ष 3 मास 16 दिन

के.पी. अयनांश : 23:44:13

फॉरच्युना : कन्या 27:00:29

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		तुला	24:53:02	शुक्र	गुरु	बुध	मंगल
चंद्र		कर्क	27:24:55	चंद्र	बुध	गुरु	चंद्र
मंगल		सिंह	27:00:34	सूर्य	सूर्य	सूर्य	शनि
बुध		वृश्चि	17:40:30	मंगल	बुध	बुध	मंगल
गुरु	व	कुंभ	24:26:00	शनि	गुरु	बुध	शुक्र
शुक्र		तुला	27:55:26	शुक्र	गुरु	शुक्र	गुरु
शनि	व	मेष	04:59:38	मंगल	केतु	मंगल	गुरु
राहु		सिंह	04:04:29	सूर्य	केतु	चंद्र	गुरु
केतु		कुंभ	04:04:29	शनि	मंगल	शुक्र	गुरु
हर्ष		मक	15:18:18	शनि	चंद्र	गुरु	मंगल
नेप		मक	05:54:31	शनि	सूर्य	बुध	चंद्र
प्लूटो		वृश्चि	13:26:38	मंगल	शनि	राहु	गुरु

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	धनु	24:28:36	गुरु	शुक्र	बुध	शुक्र
2	कुंभ	01:46:56	शनि	मंगल	बुध	शनि
3	मीन	09:22:12	गुरु	शनि	शुक्र	गुरु
4	मेष	11:10:06	मंगल	केतु	शनि	गुरु
5	वृष	07:08:11	शुक्र	सूर्य	केतु	शुक्र
6	मिथु	00:19:59	बुध	मंगल	बुध	केतु
7	मिथु	24:28:36	बुध	गुरु	बुध	शुक्र
8	सिंह	01:46:56	सूर्य	केतु	शुक्र	राहु
9	कन्या	09:22:12	बुध	सूर्य	शुक्र	शनि
10	तुला	11:10:06	शुक्र	राहु	शनि	केतु
11	वृश्चि	07:08:11	मंगल	शनि	बुध	शनि
12	धनु	00:19:59	गुरु	केतु	केतु	राहु

भाव कुंडली

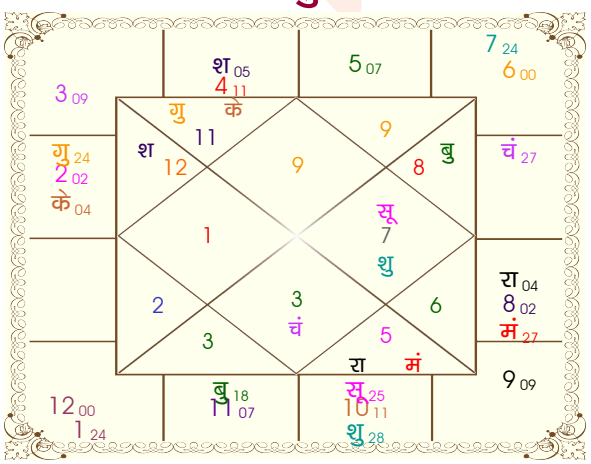

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	बुध- गुरु-
2	बुध- गुरु-
3	चंद्र-
4	सूर्य-
5	सूर्य+ बुध, गुरु+ शुक्र, राहु,
6	मंगल, बुध+ गुरु, शुक्र, शनि, राहु+
7	चंद्र, गुरु- शुक्र- शनि-
8	गुरु- शुक्र- शनि-
9	मंगल- शनि-
10	मंगल+ शनि,
11	चंद्र, गुरु- शुक्र- शनि- केतु+
12	शुक्र-

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	सूर्य- गुरु, शुक्र-
2	सूर्य, गुरु+ शुक्र, शनि+ राहु, केतु,
3	सूर्य- गुरु, शुक्र- शनि,
4	मंगल- केतु-
5	शुक्र-
6	चंद्र- बुध,
7	चंद्र+ बुध,
8	सूर्य- मंगल+ राहु, केतु,
9	चंद्र- बुध,
10	सूर्य, मंगल, शुक्र,
11	चंद्र, मंगल- बुध+ केतु-
12	सूर्य- गुरु, शुक्र-

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	4- 5+
चंद्र	3- 7, 11,
मंगल	6, 9- 10+
बुध	1- 2- 5, 6+
गुरु	1- 2- 5+ 6, 7- 8- 11-
शुक्र	5, 6, 7- 8- 11- 12-
शनि	6, 7- 8- 9- 10, 11-
राहु	5, 6+
केतु	11+

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	1- 2, 3- 8- 10, 12-
चंद्र	6- 7+ 9- 11,
मंगल	4- 8+ 10, 11-
बुध	6, 7, 9, 11+
गुरु	1, 2+ 3, 12,
शुक्र	1- 2, 3- 5- 10, 12-
शनि	2+ 3,
राहु	2, 8,
केतु	2, 4- 8, 11-

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	मंगल
लग्न राशि स्वामी	बुध
राशि नक्षत्र स्वामी	केतु
राशि स्वामी	गुरु
वार स्वामी	शनि
लग्न अन्तर स्वामी	सूर्य
राशि अन्तर स्वामी	शनि

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	शुक्र
लग्न राशि स्वामी	गुरु
राशि नक्षत्र स्वामी	बुध
राशि स्वामी	चन्द्र
वार स्वामी	बुध
लग्न अन्तर स्वामी	बुध
राशि अन्तर स्वामी	गुरु

विंशोत्तरी दशा

केतु 1 वर्ष 1 मास 24 दिन

केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष	
28/10/1995		21/12/1996		21/12/2016	
21/12/1996		21/12/2016		22/12/2022	
00/00/0000	शुक्र	22/04/2000	सूर्य	10/04/2017	
00/00/0000	सूर्य	22/04/2001	चंद्र	10/10/2017	
00/00/0000	चंद्र	22/12/2002	मंगल	14/02/2018	
00/00/0000	मंगल	21/02/2004	राहु	09/01/2019	
00/00/0000	राहु	21/02/2007	गुरु	28/10/2019	
00/00/0000	गुरु	22/10/2009	शनि	09/10/2020	
28/10/1995	शनि	21/12/2012	बुध	16/08/2021	
शनि 25/12/1995	बुध	22/10/2015	केतु	22/12/2021	
बुध 21/12/1996	केतु	21/12/2016	शुक्र	22/12/2022	

चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष	
22/12/2022		21/12/2032		22/12/2039	
21/12/2032		22/12/2039		22/12/2057	
चंद्र	22/10/2023	मंगल	20/05/2033	राहु	03/09/2042
मंगल	22/05/2024	राहु	07/06/2034	गुरु	27/01/2045
राहु	21/11/2025	गुरु	14/05/2035	शनि	04/12/2047
गुरु	23/03/2027	शनि	22/06/2036	बुध	22/06/2050
शनि	22/10/2028	बुध	19/06/2037	केतु	11/07/2051
बुध	23/03/2030	केतु	15/11/2037	शुक्र	11/07/2054
केतु	22/10/2030	शुक्र	15/01/2039	सूर्य	04/06/2055
शुक्र	22/06/2032	सूर्य	23/05/2039	चंद्र	03/12/2056
सूर्य	21/12/2032	चंद्र	22/12/2039	मंगल	22/12/2057

गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
22/12/2057		22/12/2073		21/12/2092	
22/12/2073		21/12/2092		23/12/2109	
गुरु	09/02/2060	शनि	24/12/2076	बुध	20/05/2095
शनि	22/08/2062	बुध	04/09/2079	केतु	16/05/2096
बुध	27/11/2064	केतु	12/10/2080	शुक्र	17/03/2099
केतु	03/11/2065	शुक्र	13/12/2083	सूर्य	22/01/2100
शुक्र	04/07/2068	सूर्य	24/11/2084	चंद्र	23/06/2101
सूर्य	22/04/2069	चंद्र	25/06/2086	मंगल	20/06/2102
चंद्र	22/08/2070	मंगल	04/08/2087	राहु	07/01/2105
मंगल	29/07/2071	राहु	10/06/2090	गुरु	15/04/2107
राहु	22/12/2073	गुरु	21/12/2092	शनि	23/12/2109

बुध 3 वर्ष 5 मास 2 दिन

बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष	
11/11/1998		15/04/2002		15/04/2009	
15/04/2002		15/04/2009		15/04/2029	
00/00/0000	केतु	11/09/2002	शुक्र	14/08/2012	
00/00/0000	शुक्र	11/11/2003	सूर्य	14/08/2013	
00/00/0000	सूर्य	18/03/2004	चंद्र	15/04/2015	
00/00/0000	चंद्र	17/10/2004	मंगल	14/06/2016	
00/00/0000	मंगल	15/03/2005	राहु	15/06/2019	
00/00/0000	राहु	03/04/2006	गुरु	13/02/2022	
11/11/1998	गुरु	10/03/2007	शनि	15/04/2025	
गुरु 06/08/1999	शनि	17/04/2008	बुध	13/02/2028	
शनि 15/04/2002	बुध	15/04/2009	केतु	15/04/2029	

सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष	
15/04/2029		15/04/2035		15/04/2045	
15/04/2035		15/04/2045		14/04/2052	
सूर्य	02/08/2029	चंद्र	13/02/2036	मंगल	11/09/2045
चंद्र	01/02/2030	मंगल	13/09/2036	राहु	29/09/2046
मंगल	09/06/2030	राहु	15/03/2038	गुरु	05/09/2047
राहु	03/05/2031	गुरु	15/07/2039	शनि	14/10/2048
गुरु	20/02/2032	शनि	13/02/2041	बुध	11/10/2049
शनि	01/02/2033	बुध	15/07/2042	केतु	09/03/2050
बुध	08/12/2033	केतु	13/02/2043	शुक्र	09/05/2051
केतु	15/04/2034	शुक्र	14/10/2044	सूर्य	14/09/2051
शुक्र	15/04/2035	सूर्य	15/04/2045	चंद्र	14/04/2052

राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष	
14/04/2052		15/04/2070		15/04/2086	
15/04/2070		15/04/2086		16/04/2105	
राहु	26/12/2054	गुरु	02/06/2072	शनि	18/04/2089
गुरु	21/05/2057	शनि	14/12/2074	बुध	27/12/2091
शनि	27/03/2060	बुध	21/03/2077	केतु	04/02/2093
बुध	14/10/2062	केतु	25/02/2078	शुक्र	05/04/2096
केतु	02/11/2063	शुक्र	26/10/2080	सूर्य	18/03/2097
शुक्र	02/11/2066	सूर्य	14/08/2081	चंद्र	17/10/2098
सूर्य	26/09/2067	चंद्र	14/12/2082	मंगल	26/11/2099
चंद्र	27/03/2069	मंगल	20/11/2083	राहु	03/10/2102
मंगल	15/04/2070	राहु	15/04/2086	गुरु	16/04/2105

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध	
21/11/2025		23/03/2027		22/10/2028	
23/03/2027		22/10/2028		23/03/2030	
गुरु	25/01/2026	शनि	23/06/2027	बुध	03/01/2029
शनि	12/04/2026	बुध	13/09/2027	केतु	02/02/2029
बुध	20/06/2026	केतु	16/10/2027	शुक्र	29/04/2029
केतु	19/07/2026	शुक्र	21/01/2028	सूर्य	25/05/2029
शुक्र	08/10/2026	सूर्य	19/02/2028	चंद्र	07/07/2029
सूर्य	01/11/2026	चंद्र	07/04/2028	मंगल	06/08/2029
चंद्र	12/12/2026	मंगल	11/05/2028	राहु	23/10/2029
मंगल	09/01/2027	राहु	05/08/2028	गुरु	31/12/2029
राहु	23/03/2027	गुरु	22/10/2028	शनि	23/03/2030

शुक्र - बुध		शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य	
15/04/2025		13/02/2028		15/04/2029	
13/02/2028		15/04/2029		02/08/2029	
बुध	08/09/2025	केतु	09/03/2028	सूर्य	20/04/2029
केतु	08/11/2025	शुक्र	19/05/2028	चंद्र	29/04/2029
शुक्र	29/04/2026	सूर्य	10/06/2028	मंगल	06/05/2029
सूर्य	20/06/2026	चंद्र	15/07/2028	राहु	22/05/2029
चंद्र	14/09/2026	मंगल	09/08/2028	गुरु	06/06/2029
मंगल	13/11/2026	राहु	12/10/2028	शनि	23/06/2029
राहु	18/04/2027	गुरु	08/12/2028	बुध	08/07/2029
गुरु	03/09/2027	शनि	13/02/2029	केतु	15/07/2029
शनि	13/02/2028	बुध	15/04/2029	शुक्र	02/08/2029

चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य	
23/03/2030		22/10/2030		22/06/2032	
22/10/2030		22/06/2032		21/12/2032	
केतु	04/04/2030	शुक्र	31/01/2031	सूर्य	01/07/2032
शुक्र	10/05/2030	सूर्य	03/03/2031	चंद्र	16/07/2032
सूर्य	21/05/2030	चंद्र	23/04/2031	मंगल	27/07/2032
चंद्र	07/06/2030	मंगल	28/05/2031	राहु	23/08/2032
मंगल	20/06/2030	राहु	27/08/2031	गुरु	17/09/2032
राहु	22/07/2030	गुरु	17/11/2031	शनि	15/10/2032
गुरु	19/08/2030	शनि	21/02/2032	बुध	10/11/2032
शनि	22/09/2030	बुध	17/05/2032	केतु	21/11/2032
बुध	22/10/2030	केतु	22/06/2032	शुक्र	21/12/2032

सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु	
02/08/2029		01/02/2030		09/06/2030	
01/02/2030		09/06/2030		03/05/2031	
चंद्र	17/08/2029	मंगल	08/02/2030	राहु	28/07/2030
मंगल	28/08/2029	राहु	27/02/2030	गुरु	10/09/2030
राहु	24/09/2029	गुरु	16/03/2030	शनि	01/11/2030
गुरु	19/10/2029	शनि	06/04/2030	बुध	17/12/2030
शनि	17/11/2029	बुध	24/04/2030	केतु	06/01/2031
बुध	13/12/2029	केतु	01/05/2030	शुक्र	01/03/2031
केतु	23/12/2029	शुक्र	23/05/2030	सूर्य	18/03/2031
शुक्र	23/01/2030	सूर्य	29/05/2030	चंद्र	14/04/2031
सूर्य	01/02/2030	चंद्र	09/06/2030	मंगल	03/05/2031

मंगल - मंगल		मंगल - राहु		मंगल - गुरु	
21/12/2032		20/05/2033		07/06/2034	
20/05/2033		07/06/2034		14/05/2035	
मंगल	30/12/2032	राहु	16/07/2033	गुरु	23/07/2034
राहु	21/01/2033	गुरु	05/09/2033	शनि	14/09/2034
गुरु	10/02/2033	शनि	05/11/2033	बुध	02/11/2034
शनि	06/03/2033	बुध	29/12/2033	केतु	22/11/2034
बुध	27/03/2033	केतु	21/01/2034	शुक्र	17/01/2035
केतु	05/04/2033	शुक्र	26/03/2034	सूर्य	04/02/2035
शुक्र	30/04/2033	सूर्य	14/04/2034	चंद्र	04/03/2035
सूर्य	07/05/2033	चंद्र	16/05/2034	मंगल	24/03/2035
चंद्र	20/05/2033	मंगल	07/06/2034	राहु	14/05/2035

सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - बुध	
03/05/2031		20/02/2032		01/02/2033	
20/02/2032		01/02/2033		08/12/2033	
गुरु	11/06/2031	शनि	14/04/2032	बुध	16/03/2033
शनि	28/07/2031	बुध	03/06/2032	केतु	04/04/2033
बुध	07/09/2031	केतु	23/06/2032	शुक्र	25/05/2033
केतु	24/09/2031	शुक्र	20/08/2032	सूर्य	10/06/2033
शुक्र	12/11/2031	सूर्य	06/09/2032	चंद्र	06/07/2033
सूर्य	26/11/2031	चंद्र	05/10/2032	मंगल	24/07/2033
चंद्र	21/12/2031	मंगल	25/10/2032	राहु	08/09/2033
मंगल	07/01/2032	राहु	16/12/2032	गुरु	20/10/2033
राहु	20/02/2032	गुरु	01/02/2033	शनि	08/12/2033

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - शनि		मंगल - बुध		मंगल - केतु	
14/05/2035		22/06/2036		19/06/2037	
22/06/2036		19/06/2037		15/11/2037	
शनि	17/07/2035	बुध	12/08/2036	केतु	28/06/2037
बुध	12/09/2035	केतु	02/09/2036	शुक्र	23/07/2037
केतु	06/10/2035	शुक्र	02/11/2036	सूर्य	30/07/2037
शुक्र	12/12/2035	सूर्य	20/11/2036	चंद्र	11/08/2037
सूर्य	02/01/2036	चंद्र	20/12/2036	मंगल	20/08/2037
चंद्र	04/02/2036	मंगल	10/01/2037	राहु	11/09/2037
मंगल	28/02/2036	राहु	05/03/2037	गुरु	01/10/2037
राहु	29/04/2036	गुरु	23/04/2037	शनि	25/10/2037
गुरु	22/06/2036	शनि	19/06/2037	बुध	15/11/2037

सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र	
08/12/2033		15/04/2034		15/04/2035	
15/04/2034		15/04/2035		13/02/2036	
केतु	15/12/2033	शुक्र	15/06/2034	चंद्र	10/05/2035
शुक्र	06/01/2034	सूर्य	03/07/2034	मंगल	28/05/2035
सूर्य	12/01/2034	चंद्र	02/08/2034	राहु	13/07/2035
चंद्र	23/01/2034	मंगल	24/08/2034	गुरु	22/08/2035
मंगल	30/01/2034	राहु	17/10/2034	शनि	10/10/2035
राहु	18/02/2034	गुरु	05/12/2034	बुध	22/11/2035
गुरु	07/03/2034	शनि	01/02/2035	केतु	09/12/2035
शनि	28/03/2034	बुध	25/03/2035	शुक्र	29/01/2036
बुध	15/04/2034	केतु	15/04/2035	सूर्य	13/02/2036

मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र	
15/11/2037		15/01/2039		23/05/2039	
15/01/2039		23/05/2039		22/12/2039	
शुक्र	25/01/2038	सूर्य	22/01/2039	चंद्र	10/06/2039
सूर्य	15/02/2038	चंद्र	01/02/2039	मंगल	22/06/2039
चंद्र	23/03/2038	मंगल	09/02/2039	राहु	24/07/2039
मंगल	17/04/2038	राहु	28/02/2039	गुरु	22/08/2039
राहु	20/06/2038	गुरु	17/03/2039	शनि	24/09/2039
गुरु	16/08/2038	शनि	06/04/2039	बुध	25/10/2039
शनि	22/10/2038	बुध	24/04/2039	केतु	06/11/2039
बुध	21/12/2038	केतु	02/05/2039	शुक्र	11/12/2039
केतु	15/01/2039	शुक्र	23/05/2039	सूर्य	22/12/2039

चंद्र - मंगल		चंद्र - राहु		चंद्र - गुरु	
13/02/2036		13/09/2036		15/03/2038	
13/09/2036		15/03/2038		15/07/2039	
मंगल	26/02/2036	राहु	05/12/2036	गुरु	19/05/2038
राहु	29/03/2036	गुरु	16/02/2037	शनि	04/08/2038
गुरु	26/04/2036	शनि	13/05/2037	बुध	12/10/2038
शनि	30/05/2036	बुध	30/07/2037	केतु	10/11/2038
बुध	29/06/2036	केतु	31/08/2037	शुक्र	30/01/2039
केतु	12/07/2036	शुक्र	30/11/2037	सूर्य	23/02/2039
शुक्र	16/08/2036	सूर्य	28/12/2037	चंद्र	05/04/2039
सूर्य	27/08/2036	चंद्र	11/02/2038	मंगल	03/05/2039
चंद्र	13/09/2036	मंगल	15/03/2038	राहु	15/07/2039

राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि	
22/12/2039		03/09/2042		27/01/2045	
03/09/2042		27/01/2045		04/12/2047	
राहु	18/05/2040	गुरु	29/12/2042	शनि	11/07/2045
गुरु	27/09/2040	शनि	17/05/2043	बुध	05/12/2045
शनि	02/03/2041	बुध	18/09/2043	केतु	04/02/2046
बुध	19/07/2041	केतु	08/11/2043	शुक्र	27/07/2046
केतु	15/09/2041	शुक्र	02/04/2044	सूर्य	17/09/2046
शुक्र	26/02/2042	सूर्य	16/05/2044	चंद्र	13/12/2046
सूर्य	17/04/2042	चंद्र	28/07/2044	मंगल	12/02/2047
चंद्र	08/07/2042	मंगल	17/09/2044	राहु	18/07/2047
मंगल	03/09/2042	राहु	27/01/2045	गुरु	04/12/2047

चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु	
15/07/2039		13/02/2041		15/07/2042	
13/02/2041		15/07/2042		13/02/2043	
शनि	15/10/2039	बुध	27/04/2041	केतु	28/07/2042
बुध	05/01/2040	केतु	27/05/2041	शुक्र	01/09/2042
केतु	08/02/2040	शुक्र	21/08/2041	सूर्य	12/09/2042
शुक्र	14/05/2040	सूर्य	16/09/2041	चंद्र	29/09/2042
सूर्य	12/06/2040	चंद्र	29/10/2041	मंगल	12/10/2042
चंद्र	30/07/2040	मंगल	29/11/2041	राहु	13/11/2042
मंगल	02/09/2040	राहु	14/02/2042	गुरु	11/12/2042
राहु	28/11/2040	गुरु	24/04/2042	शनि	14/01/2043
गुरु	13/02/2041	शनि	15/07/2042	बुध	13/02/2043

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

1	मूलांक	2
8	भाग्यांक	4
1, 4, 8, 9	मित्र अंक	2, 7, 8, 4
3, 5, 6	शत्रु अंक	5, 6
19,28,37,46,55	शुभ वर्ष	20,29,38,47,56
बुध, शुक्र, शनि	शुभ दिन	रवि, गुरु, मंगल
बुध, शुक्र, शनि	शुभ ग्रह	सूर्य, गुरु, मंगल
मीन, सिंह	मित्र राशि	मीन, मेष
कन्या, कुम्भ, मेष	मित्र लग्न	मीन, सिंह, तुला
हनुमान	अनुकूल देवता	शिव
पन्ना	शुभ रत्न	पुखराज
संगपन्ना, मरगज	शुभ उपरत्न	सुनहला, पीला हकीक
नीलम	भाग्य रत्न	माणिक्य
कांसा	शुभ धातु	कांसा
हरित	शुभ रंग	पीत
उत्तर	शुभ दिशा	पूर्वोत्तर
सूर्योदय के बाद	शुभ समय	संध्या
हाथी दाँत, कपूर, फल	दान पदार्थ	हल्दी, पुस्तक, पीत पुष्प
मूँग	दान अन्न	दाल चना
घी	दान द्रव्य	घी

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

पंचधा मैत्री - SAHIL BHOGAL

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	अतिमित्र	अतिमित्र	मित्र	अतिमित्र	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु
चंद्र	अतिमित्र	---	मित्र	अतिमित्र	मित्र	मित्र	मित्र	सम	अधिशत्रु
मंगल	अतिमित्र	अतिमित्र	---	सम	सम	मित्र	मित्र	सम	सम
बुध	अतिमित्र	सम	मित्र	---	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
गुरु	अतिमित्र	अतिमित्र	सम	सम	---	सम	मित्र	मित्र	शत्रु
शुक्र	अधिशत्रु	सम	मित्र	अतिमित्र	मित्र	---	सम	सम	सम
शनि	अधिशत्रु	सम	सम	सम	मित्र	सम	---	सम	सम
राहु	अधिशत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	सम	सम	---	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम	शत्रु	शत्रु	सम	सम	अधिशत्रु	---

पंचधा मैत्री - AVNEET

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	अतिमित्र	अतिमित्र	मित्र	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु
चंद्र	अतिमित्र	---	मित्र	सम	शत्रु	मित्र	मित्र	सम	अधिशत्रु
मंगल	अतिमित्र	अतिमित्र	---	सम	सम	मित्र	शत्रु	अधिशत्रु	सम
बुध	अतिमित्र	अधिशत्रु	मित्र	---	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	मित्र	मित्र
गुरु	सम	सम	सम	सम	---	अधिशत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु
शुक्र	अधिशत्रु	सम	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	---	सम	अतिमित्र	सम
शनि	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु	सम	मित्र	सम	---	सम	सम
राहु	सम	सम	अधिशत्रु	मित्र	शत्रु	अतिमित्र	सम	---	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम	मित्र	शत्रु	सम	सम	अधिशत्रु	---

रत्न चयन

किसी भी कुंडली में दशानुसार ग्रह का उपाय एवं रत्न धारण करने से शुभत्व में वृद्धि होती है। वैज्ञानिक रूप से विशिष्ट ग्रह का मंत्रोच्चारण करने से उस ग्रह की रश्मियों की मानव शरीर के चारों ओर सुरक्षा श्रृंखला बन जाती है एवं रत्न रश्मियों को सोखकर मानव शरीर में प्रवाहित कर शुभत्व में वृद्धि करता है। अतः रत्न का बेदाग होना एवं शरीर से स्पर्श करना अत्यंत आवश्यक माना गया है।

सामान्यतया उपाय ग्रह दशा के फल की वृद्धि के लिए महादशा स्वामी का किया जाता है। उपाय में मंत्रोच्चारण, दान एवं व्रत ही प्रमुख हैं। रत्न निर्बल परंतु लग्नेश, भाग्येश या योगकारक ग्रहों का पहना जाता है। आपको कब कौन सा उपाय या रत्न धारण करना चाहिए नीचे तालिका में उसके कार्यसिद्धि क्षेत्र सहित दिया गया है। महादशाओं में रत्नों के तीन-तीन विकल्प दिए गए हैं। आपको कोई भी विकल्प उसकी कार्यसिद्धि क्षेत्र एवं क्षमता देखकर अपनी आवश्यकतानुसार पहन सकते हैं तथा अतिरिक्त उपाय भी अपनी क्षमतानुसार कर सकते हैं।

SAHIL BHOGAL

जीवन रत्नः	पन्ना	सुख, स्वास्थ्य
भाग्य रत्नः	नीलम	भाग्योदय, दुर्घटना से बचाव
कारक रत्नः	हीरा	सन्तति सुख, कम खर्च
शुभ उपरत्नः	गोमेद	सन्तति सुख

AVNEET

जीवन रत्नः	पुखराज	पराक्रम, स्वास्थ्य, सुख
भाग्य रत्नः	माणिक्य	धनार्जन, भाग्योदय
कारक रत्नः	मूंगा	भाग्योदय, सन्तति सुख, कम खर्च

रत्न	ग्रह	रत्ती	धातु	अंगुली	दिन	समय	नक्षत्र
माणिक्य	सूर्य	4	सोना	अना	रविवार	सुबह	कृतिका, उ०फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा
मोती	चन्द्र	4	चांदी	कनि	सोमवार	सुबह	रोहिणी, हस्त, श्रवण
मूंगा	मंगल	6	चांदी	अना	मंगलवार	सुबह	मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा
पन्ना	बुध	4	सोना	कनि	बुधवार	सुबह	आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती
पुखराज	गुरु	4	सोना	तर्जन	गुरुवार	सुबह	पुनर्वसु, विशाखा, पू०भाद्रपद
हीरा	शुक्र	1	प्लेटि	कनि	शुक्रवार	सुबह	भरणी, पू०फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा
नीलम	शनि	4	पंचधातु	मध्य	शनिवार	शाम	पुष्य, अनुराधा, उ०भाद्रपद
गोमेद	राहु	5	अष्टधातु	मध्य	शनिवार	रात्रि	आर्द्रा, स्वाति, शतभिषा
लहसुनिया	केतु	6	चांदी	अना	गुरुवार	रात्रि	अश्विनी, मघा, मूल

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	28/10/1995-16/04/1998
अष्टम स्थानस्थ ढैया	05/09/2004-01/11/2006
साढेसाती प्रथम ढैया	02/11/2014-19/01/2017
साढेसाती द्वितीय ढैया	19/01/2017-18/01/2020
साढेसाती तृतीय ढैया	18/01/2020-21/07/2022

द्वितीय चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	24/03/2025-26/10/2027
अष्टम स्थानस्थ ढैया	06/07/2034-20/08/2036
साढेसाती प्रथम ढैया	02/12/2043-29/11/2046
साढेसाती द्वितीय ढैया	29/11/2046-20/07/2049
साढेसाती तृतीय ढैया	20/07/2049-17/02/2052

तृतीय चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	09/09/2054-01/04/2057
अष्टम स्थानस्थ ढैया	15/02/2064-03/10/2065
साढेसाती प्रथम ढैया	20/04/2073-04/08/2076
साढेसाती द्वितीय ढैया	04/08/2076-03/01/2079
साढेसाती तृतीय ढैया	03/01/2079-18/08/2081

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	सम	व्यावसाय
अष्टम स्थानस्थ ढैया	अशुभ	धन
साढेसाती प्रथम ढैया	अशुभ	शत्रु से कष्ट
साढेसाती द्वितीय ढैया	सम	दम्पति
साढेसाती तृतीय ढैया	शुभ	दुर्घटना से बचाव

प्रथम चक्र:

साढेसाती प्रथम ढैया	22/07/2002-05/09/2004
साढेसाती द्वितीय ढैया	05/09/2004-01/11/2006
साढेसाती तृतीय ढैया	01/11/2006-09/09/2009
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	15/11/2011-02/11/2014
अष्टम स्थानस्थ ढैया	21/07/2022-24/03/2025

द्वितीय चक्र:

साढेसाती प्रथम ढैया	25/05/2032-06/07/2034
साढेसाती द्वितीय ढैया	06/07/2034-20/08/2036
साढेसाती तृतीय ढैया	20/08/2036-29/06/2039
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	06/03/2041-02/12/2043
अष्टम स्थानस्थ ढैया	17/02/2052-09/09/2054

तृतीय चक्र:

साढेसाती प्रथम ढैया	05/07/2061-15/02/2064
साढेसाती द्वितीय ढैया	15/02/2064-03/10/2065
साढेसाती तृतीय ढैया	03/10/2065-21/08/2068
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	25/10/2070-20/04/2073
अष्टम स्थानस्थ ढैया	18/08/2081-09/03/2084

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती प्रथम ढैया	सम	दम्पति
साढेसाती द्वितीय ढैया	अशुभ	दुर्घटना
साढेसाती तृतीय ढैया	अशुभ	बदनामी
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	धनार्जन
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	पराक्रम

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त

किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

SAHIL BHOGAL

आपकी जन्मकुण्डली में पद्म नामक कालसर्प योग केवल अनुदित रूप में विद्यमान है। अनुदित योग पूर्णरूप से कालसर्प योग की परिभाषा में नहीं आता, लेकिन फिर भी इसका कुछ फल अवश्य मिलता है। इसके कारण जातक के विद्याध्ययन में थोड़ा बहुत व्यवधान उपस्थित होता है। परन्तु कालान्तर में वह व्यवधान समाप्त हो जाता है। सन्तान प्रायः विलम्ब से प्राप्त होती है या उसको होने में आंशिक रूप से व्यवधान उपस्थित होता है। पुत्र सन्तान की प्रायः चिन्ता बनी रहती है। जातक का स्वास्थ्य कभी असामान्य हो जाता है।

इस योग के कारण दाम्पत्य जीवन सामान्य होते हुए भी कभी दुःखमय हो जाता है। परिवार में जातक को अपयश मिलने का भय बना रहता है और जातक के मित्रगण स्वार्थी होते हैं और वे सब जातक का पतन कराने में सहायक होते हैं। कभी जातक को तनावग्रस्त जीवन व्यतीत करना पड़ता है।

इस योग के प्रभाव से जातक के गुप्त शत्रु रहते हैं। वे सब थोड़ा बहुत नुकसान पहुंचाते हैं। लाभ मार्ग में आंशिक बाधा उत्पन्न होती है एवं चिन्ता कष्ट के कारण जीवन संघर्षमय बना रहता है। जातक द्वारा संग्रहीत सम्पत्ति को प्रायः दूसरे लोग हरण कर लेते हैं। जातक को कभी रोग व्याधि भी घेर लेती है और रोग व्याधि में अधिक धन खर्च हो जाने के कारण आर्थिक संकट जातक के ऊपर उपस्थित हो जाता है तथा जातक वृद्धावस्था को लेकर चिन्तित रहता है एवं कभी-कभी जातक के मन में सन्यास ग्रहण करने की भावना जागृत हो जाती है। लेकिन इतना सब कुछ होने के बाद भी जातक के जीवन में कई सफलता मिलती हैं।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. बहते पानी में नारियल के फल को तीन बार शुभ मुहूर्त्त में प्रवाहित करें।
3. बहते पानी में कोयला को शुभ मुहूर्त्त में तीन बार प्रवाहित करें।
4. हरिजन को मसूर की दाल तथा द्रव्य शुभ मुहूर्त्त में तीन बार दान करें।
5. हनुमान चलीसा का 108 बार पाठ करें।
6. शयन कक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग करें।
7. कुल देवता की पूजा करें।
8. धूम्रवस्त्र, तिल, कम्बल एवं सप्तधान्य शुभ मुहूर्त्त में रात्रि को दान करें।

9. केतु की उपासना उसकी महादशा में अवश्य करें।
10. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबाल कर एक बार स्नान करें।
11. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।
12. नीला रूमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन, लोहे की अंगूठी धारण करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

AVNEET

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	क्षत्रिय	विप्र	1	0.00	--	जातीय कर्म
वश्य	मानव	जलचर	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	सम्पत	अतिमित्र	3	3.00	--	भाग्य
योनि	श्वान	मार्जार	4	1.00	--	यौन विचार
मैत्री	गुरु	चन्द्र	5	4.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	राक्षस	राक्षस	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	धनु	कर्क	7	0.00	हाँ	जीवन शैली
नाड़ी	आद्य	अन्त्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	23.00		

भकूट दोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता है।

SAHIL BHOGAL का वर्ग मूषक है तथा AVNEET का वर्ग श्वान है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार SAHIL BHOGAL और AVNEET का मिलान औसत है।

मंगलीक दोष मिलान

SAHIL BHOGAL मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में षष्ठ भाव में स्थित है।

AVNEET मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में नवम् भाव में स्थित है।

SAHIL BHOGAL तथा AVNEET में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।

अष्टकूट फलादेश

वर्ण

SAHIL BHOGAL का वर्ण क्षत्रिय तथा AVNEET का वर्ण ब्राह्मण है। अतः यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। जिसके कारण दोनों के बीच सदैव अहं का टकराव होता रहेगा। साथ ही AVNEET हमेशा श्रेष्ठता मनोग्रंथि से ग्रस्त रहेंगी तथा स्वयं को अपने पति से हमेशा अधिक बुद्धिमान एवं चतुर समझेंगी। श्रेष्ठता की यही भावना SAHIL BHOGAL एवं बच्चों के विकास में बाधक साबित हो सकती है।

वश्य

SAHIL BHOGAL का वश्य द्विपद अर्थात मनुष्य है एवं AVNEET का वश्य जलचर है अतः यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। मनुष्य एवं जलचर दोनों प्रकृति के अंग हैं यद्यपि कि दोनों के स्वभाव, गुण, पसंद/नापसंद बिल्कुल अलग होते हैं तथा प्रकृति ने दोनों के अलग-अलग कार्य एवं उत्तरदायित्व निर्धारित किये हैं। इसलियें SAHIL BHOGAL एवं AVNEET दोनों सामान्यतः एक-दूसरे के कार्यों में हस्तक्षेप नहीं करेंगे तथा एक-दूसरे के लिए हानिकारक सिद्ध नहीं होंगे। सामान्यतः SAHIL BHOGAL AVNEET पर नियंत्रण स्थापित करने में समर्थ होगा। हालांकि यह अनुकूल मिलान नहीं है क्योंकि SAHIL BHOGAL हमेश AVNEET के ऊपर हावी रहेगा।

तारा

SAHIL BHOGAL की तारा सम्पत तथा AVNEET की तारा अतिमित्र है। अतः तारा मिलान अनुकूल होने के कारण यह मिलान अति उत्तम मिलान है। इस मिलान के कारण उत्तम स्वास्थ्य, धन एवं समृद्धि का बनी रहेगी। इस विवाह से SAHIL BHOGAL एवं AVNEET दोनों के सौभाग्य के द्वार खुल जायेंगे। AVNEET एक अच्छे साथी की भूमिका अदा करने वाली होगी तथा अपने पति की हर प्रकार से समय समय पर मदद करती रहेगी। घर में प्रेम, शांति एवं सौहार्द का माहौल बना रहेगा। इनकी संतान भी काफी अच्छी होंगी तथा जीवन में सफलता प्राप्त करती रहेंगी।

योनि

SAHIL BHOGAL की योनि श्वान है तथा AVNEET की योनि मार्जार है। अर्थात दोनों की योनि समान नहीं है। इन दोनों योनि के बीच सामान्य वैर है। अतः यह मिलान अच्छा मिलान न होकर बुरा मिलान ही रहेगा। जिसके कारण दोनों की रुचि एवं पसंद नापसंद अलग-अलग ही होंगी। इनके वैवाहिक एवं पारिवारिक जीवन में अक्सर लड़ाई झगड़े हो सकते हैं। कभी- कभी लड़ाई झगड़ा घरेलू हिंसा का रूप भी ले सकता है। लड़ाई झगड़े के कारण पारिवारिक माहौल तनावपूर्ण एवं कलेशपूर्वक ही रहेगा। दोनों कभी कभी एक दूसरे पर हिंसक आक्रमण भी कर सकते हैं। दोनों के बीच झगड़े का कारण बुद्धिमत्ता एवं परस्पर समझदारी की कमी ही हो सकती है। यदि समझदारी और समझबूझ से काम न लिया गया तो कुछ समय अंतराल पर यह स्थिति मुकदमेबाजी तक भी पहुंच सकती है। इस प्रकार परस्पर प्रेम एवं सौहार्द्र

की भावना का अभाव ही रहेगा। साथ ही दोनों के बीच अविश्वास की भावना भी रह सकती है। कभी-कभी धनहानि होने की भी संभावना होगी। अतः यदि दोनों परस्पर समझदारी एवं बुद्धि से काम लें तो स्थिति को सुधारा भी जा सकता है। परस्पर लड़ाई झगड़े और वैचारिक मतभेद रहने के कारण परिवार में सुख समृद्धि का अभाव ही देखने को मिलेगा। इस प्रकार वैवाहिक जीवन संघर्षपूर्ण व कलेशपूर्वक बीतने की संभावना है अतः सतर्कता बरतें।

मैत्री

अष्टकूट मिलान में ग्रह मैत्री कूट में SAHIL BHOGAL का राशि स्वामी AVNEET के राशि स्वामी से मित्र का संबंध रखता है। जबकि AVNEET का राशि स्वामी SAHIL BHOGAL के राशि स्वामी के साथ सम का संबंध रखता है। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार से अति उत्तम मिलान है। ज्योतिष की दृष्टि से यदि एक साथी के राशि स्वामी दूसरे साथी के लिए मित्र हो किंतु दूसरे साथी के राशि स्वामी अपने साथी के राशि स्वामी को सम मानते हों तो इसे भी उत्तम मिलान माना जाता है। ऐसी स्थिति में वैवाहिक सुख, शांति, खुशहाली, प्रेम एवं समृद्धि से युक्त जीवन होता है। अतः दम्पत्ति के बीच पारस्परिक समझ, विश्वास एवं सहयोग की भावना बनी रहेगी। दोनों अपने घरेलू अथवा सामाजिक दायित्वों का निर्वहन साथ मिलकर करते रहेंगे तथा सभी की प्रशंसा का पात्र बनेंगे।

गण

SAHIL BHOGAL का गण राक्षस है तथा AVNEET का गण भी राक्षस है। अर्थात AVNEET का गण SAHIL BHOGAL के गण के समान है। अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान रहेगा। जिसके कारण SAHIL BHOGAL एवं AVNEET दोनों के स्वभाव, विचार तथा पसंद-नापसंद एक जैसे होंगे। यद्यपि कि दोनों के स्वभाव क्रूर, निष्ठुर एवं असंवेदनशील होंगे किंतु फिर भी एक-दूसरे के लिए ये अति अनुकूल एवं आदर्श साबित होंगे।

भकूट

SAHIL BHOGAL से AVNEET की राशि अष्टम भाव में स्थित है तथा AVNEET से SAHIL BHOGAL की राशि षष्ठम भाव में स्थित है। जिसके कारण यह मिलान बिल्कुल अच्छा मिलान नहीं है। क्योंकि इसमें षडाष्टक दोष लग रहा है। इस मिलान को भकूट मिलान में स्वीकृति नहीं प्रदान की जाती है तथा 0 अंक/गुण प्रदान किए जाते हैं। SAHIL BHOGAL एवं AVNEET दोनों आक्रामक, गुस्सैल एवं झगड़ालू स्वभव के होंगे। SAHIL BHOGAL शारीरिक रूप से कमजोर हो सकते हैं, उनके अनेक शत्रु हो सकते हैं तथा अपने व्यवसाय में भी उन्हें जूझना पड़ सकता है। दूसरी ओर AVNEET बिल्कुल लापरवाह, कोई भी कर्त्तव्य एवं जिम्मेदारी नहीं निभाने वाली, हरदम स्वयं के स्वार्थपूर्ति में ही खोई रहने वाली होंगी। उन्हें किसी भी प्रकार का वैवाहिक सुख प्राप्त नहीं हो पायेगा तथा उनके पति की मृत्यु की भी संभावना बनी रहेगी।

नाड़ी

SAHIL BHOGAL की नाड़ी आद्य है तथा AVNEET की नाड़ी अन्त्य है। अर्थात दोनों की

नाड़ी समान नहीं है, जो कि अष्टकूट मिलान की दृष्टि से दोष मुक्त है। अर्थात यह मिलान अति उत्तम मिलान है। इस मिलान में शरीर के दो महत्वपूर्ण अवयवों वात एवं कफ का संतुलन होता है। SAHIL BHOGAL की आद्य नाड़ी तथा AVNEET की अन्त्य नाड़ी अच्छे स्वास्थ्य, स्वस्थ एवं मजबूत शरीर, दम्पत्ति के आपसी प्रेम एवं समझदारी की द्योतक हैं। जिसके कारण आपकी संतान स्वस्थ, आज्ञाकारी एवं भाग्यशाली होंगी।

मेलापक फलित

स्वभाव

SAHIL BHOGAL की जन्म राशि अग्नितत्व युक्त धनु तथा AVNEET की राशि जलतत्व युक्त कर्क राशि है। अग्नि एवं जल में नैसर्गिक शत्रुता होने के कारण SAHIL BHOGAL और AVNEET के परस्पर दाम्पत्य संबंध अच्छे नहीं रहेंगे तथा वैवाहिक जीवन में कठिनाइयां रहेंगी अतः मिलान अच्छा नहीं रहेगा ।

SAHIL BHOGAL की जन्म राशि का स्वामी बृहस्पति तथा AVNEET की राशि का स्वामी चन्द्रमा परस्पर सम एवं मित्र राशि में स्थित हैं। अतः इसके प्रभाव से SAHIL BHOGAL और AVNEET के परस्पर संबंध मित्रता पूर्ण रहेंगे तथा एक दूसरे के गुणों की मुक्त भाव से प्रशंसा करेंगे तथा कमियों की उपेक्षा करेंगे। साथ ही एक दूसरे के प्रति प्रेम सहानुभूति एवं समर्पण के भाव का भी समय समय पर प्रदर्शन करेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुख में भी एक दूसरे को हार्दिक सहयोग प्रदान करेंगे फलतः दाम्पत्य जीवन में सुख का भाव बना रहेगा।

SAHIL BHOGAL और AVNEET की राशियां परस्पर अष्टम एवं षष्ठ भाव में पड़ती है। शास्त्रानुसार यह षडाष्टक भकूट दोष दाम्पत्य जीवन के लिए अशुभ कहलाता है। इसके प्रभाव से उपरोक्त शुभ प्रभावों में न्यूनता आएगी तथा मतभेद एवं विरोध के भाव में वृद्धि होगी जिससे दाम्पत्य संबंधों में तनाव तथा कटुता का भाव उत्पन्न होगा। एक दूसरे के प्रति SAHIL BHOGAL और AVNEET उपेक्षा का भाव रखेंगे तथा सुख दुःख में सहयोग कम ही प्रदान करेंगे। अतः वैवाहिक जीवन में सुख की अल्पता रहेगी। यदि SAHIL BHOGAL और AVNEET सामंजस्य एवं बुद्धिमता पूर्वक कार्य करें तो दुष्प्रभावों में कमी आ सकती है।

SAHIL BHOGAL का वश्य मानव तथा AVNEET का वश्य जलचर है। मानव एवं जलचर में नैसर्गिक विषमता होने के कारण इनकी अभिरूचियों में अंतर रहेगा तथा शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक स्तर पर आवश्यकताएं भिन्न रहेंगी। साथ ही काम संबंधों में भी एक दूसरे को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट करने में असमर्थ होंगे।

SAHIL BHOGAL का वर्ण क्षत्रिय तथा AVNEET का वर्ण ब्राह्मण है। अतः SAHIL BHOGAL पराक्रमी तथा साहसिक कार्यो को सम्पन्न करेंगे परन्तु AVNEET की प्रवृति शैक्षणिक तथा धार्मिक कार्यो में प्रवृत रहेगी। अतः कार्य क्षमता में अंतर से SAHIL BHOGAL और AVNEET को परेशानी का सामना करना पड़े सकता है।

धन

SAHIL BHOGAL की तारा सम्पत तथा AVNEET की तारा अतिमित्र है इसके शुभ प्रभाव से SAHIL BHOGAL सौभाग्यशाली तथा धनवान व्यक्ति होंगे तथा AVNEET के भाग्य से उनकी धन सम्पति में नित्य वृद्धि होती रहेगी। भकूट का उनकी आर्थिक स्थिति पर सामान्य प्रभाव रहेगा तथा उससे आर्थिक स्थिति सामान्य ही रहेगी। साथ ही मंगल का भी आर्थिक क्षेत्र पर कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। इस प्रकार वे ऐश्वर्य एवं समृद्धि से युक्त होंगे तथा प्रचुर मात्रा में धनार्जन

करके अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

SAHIL BHOGAL और AVNEET को अनायास धन प्राप्ति की पूर्ण संभावना रहेगी तथा जीवन में वे समस्त भौतिक सुख संसाधनों का उपभोग करने में समर्थ रहेंगे। विशेष रूप से AVNEET का शुभ प्रभाव इनकी आर्थिक स्थिति पर रहेगा तथा सामाजिक स्तर पर भी उनका पूर्ण सम्मान रहेगा।

स्वास्थ्य

SAHIL BHOGAL की नाड़ी आद्य तथा AVNEET की नाड़ी अंत्य है। अतः दोनों की नाड़ियां अलग अलग होने के कारण वे नाड़ी दोष से मुक्त माने जाएंगे। इसके प्रभाव से उनका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा पराक्रम एवं परिश्रम से अपने सांसारिक महत्व के कार्यो को सम्पन्न करने में समर्थ होंगे जिससे उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा। साथ ही मंगल का भी इनमें किसी के भी स्वास्थ्य पर कोई दुष्प्रभाव नहीं है। अतः सुखी दाम्पत्य जीवन की दृष्टि से यह मिलान उत्तम रहेगा।

संतान

संतति की दृष्टि से SAHIL BHOGAL और AVNEET का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव से SAHIL BHOGAL और AVNEET को उचित समय पर संतति प्राप्ति होगी तथा इसमें किसी भी प्रकार से विलम्ब या व्यवधान नहीं होगा। साथ ही बच्चों के मध्य अंतर भी अनुकूल रहेगा जिससे उचित मात्रा में उनका पालन पोषण करने का अवसर प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त SAHIL BHOGAL और AVNEET के पुत्र एवं कन्याओं की संख्या बराबर रहेगी।

AVNEET का प्रसव सामान्य रूप से होगा तथा इसमें उन्हें किसी भी प्रकार से परेशानी या कष्ट का सामना नहीं करना पड़ेगा। साथ ही किसी प्रसूति संबधी चिकित्सा की भी आवश्यकता नहीं रहेगी। अतः AVNEET के मन में इसके प्रति जो अनावश्यक भय या चिन्ताएं रहती है उसको दूर कर देना चाहिए तथा नियमित रूप से गर्भावस्था में डाक्टरी परीक्षण करवाने चाहिए। इस प्रकार AVNEET सुदंर स्वस्थ एवं आकर्षक बच्चों को जन्म देने में सफल होंगी तथा स्वयं भी शांति तथा स्वस्थता की अनुभूति करेंगी।

बच्चों के द्वारा SAHIL BHOGAL और AVNEET को पूर्ण सन्तुष्टि मिलेगी तथा अपनी योग्यता बुद्धिमता एवं व्यवहार कुशलता से वे अपने क्षेत्र में प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे यद्यपि माता पिता के वे आज्ञाकारी रहेंगे तथा उनकी इच्छा के विरूद्ध कोई भी कार्य नहीं करेंगे तथापि माता के प्रति उनके मन में विशेष लगाव तथा सम्मान का भाव रहेगा तथा उनकी आज्ञा पालन करने में सर्वदा तत्पर रहेंगे। इस प्रकार SAHIL BHOGAL और AVNEET का पारिवारिक जीवन सुख तथा शांति से पूर्ण रहेगा तथा प्रसन्नता पूर्वक वे अपना समय व्यतीत करेंगे।

ससुराल-सुश्री

AVNEET के सास से प्रायः अच्छे संबध रहेंगे। यद्यपि उनकी सास अन्य जनों के मामलों में कम ही हस्तक्षेप करने वाली महिला होंगी तथापि उनके कुछ सिद्धांत AVNEET के

लिए अनुकरणीय हो सकते है। साथ ही इन दोनों के मध्य कोई विशेष समस्या या मतभेद नहीं रहेंगे।

AVNEET अपने कुशल व्यवहार मधुर वाणी एवं सेवा भाव से ससुर को प्रसन्न एवं सन्तुष्ट करने में सफलता प्राप्त करेंगी। साथ ही ननद एवं देवरों के साथ भी उनके संबध मित्रता पूर्ण रहेंगे तथा उनको पूर्ण सहयोग एवं स्नेह प्रदान करेंगी। अतः उनका दिल जीतने में सफल रहेंगी।

इस प्रकार AVNEET के प्रति उनके सास ससुर का दृष्टि कोण आत्मयीता से पूर्ण रहेगा तथा घर में उसे पूर्ण सुख सुविधा तथा स्नेह प्रदान करेंगे।

ससुराल-श्री

SAHIL BHOGAL के अपनी सास से सामान्य संबध रहेंगे। वह अपनी ओर से उन्हें पूर्ण आदर तथा सम्मान प्रदान करेंगे तथा उनकी सेवा तथा सुख सुविधा के प्रति भी तत्पर रहेंगे। इनके मध्य कोई विशेष मतभेद नहीं रहेंगे तथा SAHIL BHOGAL अवसरानुकूल सपत्नीक से मिलने जाया करेंगे जिससे संबधों में मधुरता के भाव की वृद्धि होगी।

ससुर के प्रति भी SAHIL BHOGAL का आदर तथा सेवा का भाव रहेगा तथा वे भी इनको पूर्ण स्नेह तथा सहानुभूति प्रदान करेंगे साथ ही ससुर भी समय समय पर महत्वपूर्ण मामलों में SAHIL BHOGAL का दिग्दर्शन करेंगे। लेकिन साले एवं सालियों के साथ संबध अच्छे नहीं रहेंगे तथा परस्पर मतभेद एवं तनाव की बहुलता रहेगी। साथ ही एक दूसरे के प्रति प्रतिद्वन्दिता तथा ईर्ष्या का भी भाव रहेगा। लेकिन यदि SAHIL BHOGAL तथा वे आपस में सामंजस्य रखें तो संबधों में अनुकूलता आ सकती है। इस प्रकार ससुराल में SAHIL BHOGAL के संबध सामान्यतया अच्छे ही रहेंगे।

SAHIL BHOGAL

आपका जन्म मृगशिरा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में मिथुन लग्न में हुआ है। आपके जन्मकाल पूर्वीय क्षतिज पर मिथुन लग्न उदीयमान था। तत्कालिक वृश्चिक नवमांश एवं मिथुन द्रेष्काण के प्रभाव से यह स्पष्ट है कि आप व्यक्तिगत रूप से अपने जीवन को विविध व्यंजित प्रकार से संचालनार्थ दृढ़ निश्चयी हैं।

आपकी विशेषता यह है कि आप सदैव सभी चीजों में विविधता की झलक देखेंगे तथा विविधायुक्त प्राप्त करेंगे।

आपकी आकृति दुर्बल अर्थात शरीर से दुबले लंबे एवं आखें आकर्षक हैं। यह प्रमाणित है कि आप विपरीत योनि के सदस्यों के साथ लोकप्रियता का रूख रखतें हो। परिणाम स्वरूप अनेक प्रेम संबंध के प्रति अपनी पत्नी के साथ विरोधात्मक रूख अपना लेते हैं तथा आप कठोरतम कदम उठाकर गृह त्याग करने की धमकी देते हैं। आप शीघ्रता पूर्वक अपने रोबिले कार्य कलाप से जीवन संगिनी के साथ क्लेश युक्त वातावरण उत्पन्न कर लेते हैं। आपके कार्यकलाप भी विभिन्नताओं से युक्त हैं। आप सदैव एक व्यवसाय को छोड़कर अन्य व्यवसाय के लिए छलांग लगाना आपकी अत्यावश्यक दिनचर्या है।

आप एक ही समय साथ-साथ दों कार्यभार का संपादन करने के लिए तत्पर हो जाते हैं तथा उसे सकारात्मक रूप भी देते हैं। परिणामस्वरूप आप एकाग्रता पूर्वक अच्छे ढंग से कोई कार्य एक साथ एक समय पर नहीं कर पाते हैं।

आपके आय का क्षेत्र व्यापक हैं, अतः आप निःसंदेह समय-समय पर बहुत कुछ लाभ प्राप्त कर लेंगे। परंतु यह लाभ अधिक दिनों तक सुरक्षित नही रह सकेगा। क्योंकि आप की आदत ऐसी है कि आप आनंद प्राप्त करने के उमंग में खर्चीला तथा अपव्ययकारी हो जाते हैं। जबकि व्यवसायिक पक्ष के मित्र आपके घर आते हैं। उस समय आप अपने स्वामी अथवा व्यवसायिक महारथियों के साथ आमोद-प्रमोद करना पसंद करते हैं। आप असावधानी पूर्वक अचेत होकर अवकाश के समय कठिनतम संपत्ति को व्यय कर देने से जीवन में उतार-चढ़ाव के दिन देखने पड़ते हैं। इसलिए ऐसी आशंका ही नही कि आपका संपूर्ण जीवन संघर्षपूर्ण परिस्थितियों के साथ गुजरे अपितु यह पूर्णरूपेण संभाव्य है कि आपका जीवन संघर्षमय रहेगा।

आप किसी भी कार्य को संपादन करने के निर्णय को परिवर्तन करने के बजाय, आप इस प्रकार की सीख लेकर अपने स्वभाव को विस्तार पूर्वक नियम कर लें तथा बार-बार अन्य क्षेत्र में हाथ न फैलाएं। इसमें कोई संदेह नहीं कि आपकी मित्रमंडली बड़ी है तथा ये कठिन परिस्थितियों में बहुत दिनों तक आपका साथ निभा सकते हैं।

यह तथ्य पूर्ण बात है कि आपके मित्रों को आपकी मनोवृत्रि का ज्ञान होना कठिनतम है। क्योंकि आपमें मित्रों को बदलते रहने की आदत है तथा आपके इस अभिप्राय को

कोई समझ नही पाता है। परिणाम स्वरूप बहुतायत में आपके मित्र अत्यावश्यक समय पर आपका साथ छोड़ देते हैं। अर्थात् आवश्यकता पड़ने पर कोई आप का मददगार नही होता है।

संप्रति आप पूर्णरूपेण स्वस्थ हैं। बड़ी रोग या तकलीफ के पूर्व ही आपको सचेत रहना अति उत्तम है। आपकी छलांग लगाने की प्रवृत्ति से आपको विश्राम नही मिलता क्योंकि आपके मस्तिष्क में बहुत सी बातों का विचार एवं कार्य संपादन मस्तिष्क पर अधिक भार डालने का प्रयास करते रहते हैं। अतः आप ऐसी सबक लेंकर अपने मस्तिष्क से चिंता करना छोड़ दें अर्थात् चिंताओं को दिमाग से निकाल दें तथा आप सुखपूर्वक विश्राम एवं शयन करें।

आपको भावी रोगादि तथा किड़नी की दिकतें, शारीरिक खुजलाहट, इन्फ्लुऐंजा एवं श्वांसनली कि विकृतियों के प्रति सावधानी बरतना चाहिए ताकि स्वास्थ्य लाभ की निश्चितता एवं पूर्ण स्वास्थ्य लाभ प्राप्त हो सके। आप अपने खान-पान की आदतों के संबंध में भी सतर्क रहें तथा क्रमिक रूप से स्वास्थ्य परीक्षण कराना भी सहायक होगा।

आपके लिए बुधवार, एवं शुक्रवार, का दिन अनुकूल हैं, तथा मंगलवार रविवार, गुरुवार एवं सोमवार का दिन कठिन एवं हानिप्रद प्रमाणित होगा। शनिवार मध्य फलदायक है।

आपके लिए वास्तव में 7 एवं 3 अंक शुभ एवं अनुकूलता दायक है। अंक 4 एवं अंक 8 पर निर्भर न रहें क्योंकि ये अंक पूर्ण फलदायी नही हैं।

आप लाल एवं काला रंग का व्यवहार नहीं करें। आपके लिए पीला, नीला, गुलाबी एवं हरा रंग शुभ एवं प्रेरक है।

AVNEET

ज्योतिषीय आकृति से यह स्पष्ट हो रहा है कि आपका जन्म पूर्वाभाद्र पद नक्षत्र के चतुथ चरण में धनु लग्न में हुआ था। आपके जन्मकाल मेदिनीय क्षितिज पर धनु लग्न के साथ-साथ वृश्चिक राशि का नवमांश एवं सिंह राशीय द्रेष्काण भी उदित हुआ था। इसके प्रभाव से यह स्पष्ट सूचित हो रहा है कि आपका जीवन आरामदेह एवं प्रसन्नता प्रदायक होगा। प्रकृति ने आपको दृढ़ निश्चयी बना कर अपने जीवन हेतु प्रयत्नशील रहकर अपने स्वयं के लिए सहायक बनाया है।

धनु जन्म लग्न एवं सिंह द्रेष्काण का प्रभाव विभिन्न प्रकार के विषयों से संबंधित अनेक प्रकार के कर्म चिंतन का सामंजस्य पूर्ण व्यवस्था निरूपित करता है। परंतु वृश्चिक नवमांश के प्रभावानुरूप आप आक्रामक एवं असंगत प्राणी हो ऐसा प्रतीत होता है। आपका जीवन आरामदेह एवं प्रचूर धन संपत्ति से युक्त सुदृढ़-स्वस्थ्य जीवन का आनंद प्राप्ति का प्रतीक बताता है। परंतु बृश्चिक राशीय प्रभाव के अनुसार यह संभाव्य है कि आप गरीबी के जीवन में भी आ सकती हैं। अर्थात् आपका जीवन अभावग्रस्त एवं रोगगस्त भी हो सकता है। अतः आप अपने जीवन में उन्नति किस प्रकार करेंगी यह आपके कार्य एवं विचार शैली पर निर्भर करता है।

आप धन सम्पत्ति का उपार्जन कर निश्चित रूप से उसे सुरक्षित रखेंगी क्योंकि आप एक विशाल हृदय की प्राणी हैं। आप बहुत अधिक दान कर सकती हैं क्योंकि आप इस दान धर्म के लिए समर्थ प्राणी हैं। आप इस प्रकार के कार्य के ऊपर नियंत्रण रखेंगी। तब यह संभाव्य है कि आप शीघ्रतापूर्वक आनन्द लूटने के प्रलोभन में फंसकर उसका चिंतन करेंगी। आपको शान्तिपूर्वक अनर्थकारी कार्यक्रम के प्रति विपरीत आचरण करना चाहिए। आप को जूआ-सट्टा आदि गलत कार्यों का त्याग करना चाहिए।

आपके स्वास्थ्य के संबंध में विचारणीय यह है कि आप यात्रा अधिक करती हैं। इस कारणवश आपका स्वास्थ्य विकृत हो जाने की आशंका है क्योंकि आप असामयिक अधिक भोजन करती हैं। इसके अतिरिक्त अन्य कोई उपाय नहीं है कि आप स्वस्थ्य एवं प्रसन्न रह सकें। अन्यथा आप रोगादि की संभावना में पड़कर सर्दी, जुकाम, कफ, जुकाम, गठिया, वायु, रक्तचाप रोग से सामना कर सकती हैं।

आपको अपने परिवार का भली प्रकार भरण-पोषण करने के लिए आपमें यह योग्यता आवश्यक रूप से होना नितांत आवश्यक है कि आप किस प्रकार धन प्राप्त करके अपने परिवार का भरण-पोषण करेंगी। आप बहुत बड़ी विश्वासी है तथा सदैव आप विश्वसनीयता पूर्वक सत्याचरण करती हैं। तथा यह भी मानती हैं कि सत्य ही सब कुछ है। यह सन्देह है कि इन बातों का आप ध्यान नहीं रखती हैं कि इसका कोई प्रभाव अन्यों पर पड़ता है या नहीं। आप सदैव ईश्वर के प्रति श्रद्धावान होकर धार्मिक भावनाओं से युक्त होकर अनेक तीर्थ स्थानों का भ्रमण करेंगी तथा परोपकार हेतु दान प्रदान करेंगी।

आप कतिपय अच्छे कार्य व्यवसाय के प्रति अपनी अभिलाषा के अनुसार अपनी बुद्धि को अनुकूल कर सकती हैं। इनमें पुस्तक प्रकाशन, सम्पादन कार्य, शैक्षणिक संस्थान के संचालन का कार्य व्यवसायों का चयन कर सकती हैं।

आप निम्नांकित संभाव्य नियम के आधार पर अनुकूल कार्य शैली का सृजन कर सकती हैं।

आपके लिए अंकों में अंक 3, 5, 6 एवं 9 अंक अनुकूल हैं। इसके अतिरिक्त अंक 2, 7 एवं 9 अंक आपके लिए अनुपयुक्त हैं।

आपके लिए रंगों में अनुकूल रंग सफेद, क्रीम, सूआ पंखी, नीला, हरा और नारंगी रंग आपके लिए अच्छा है। परंतु इसके अतिरिक्त रंग लाल, काला एवं मोतिया रंग आपके लिए अव्यवहारणीय है।

आपके लिए साप्ताहिक दिनों में शुभ दिन रविवार, सोमवार एवं मंगलवारका दिन प्रतीत होता है। परंतु बुधवार, शुक्रवार एवं शनिवार का दिन आपके लिए अशुभफलदायी है।